आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी विभाग

चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

एवं

उ0प्र0 भाषा संस्थान, लखनऊ

आजादी का अमृत महोत्सव दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विज्ञान, समाज विज्ञान और मीडिया में हिंदी

स्थान-संगोष्ठी कक्ष हिंदी विभाग

प्रथम दिवस - 01 सितम्बर 2022

पंजीकरण :	10:00-11:00
उद्घाटन सत्र : राष्ट्रीय शिक्षा और ज्ञान क्षेत्रों में हिंदी	11:00-01:00
भोजन-	01:00-01:45
प्रथम सत्र - विज्ञान में हिंदी	02:00-04:00
द्वितीय सत्र - शोध पत्रों की प्रस्तुति	04:00-05:30

द्वितीय दिवस - 02 सितम्बर 2022

तृतीय सत्र - समाज विज्ञान में हिंदी	10:00-11:30
चतुर्थ सत्र - मीडिया में हिंदी	11:45-01:15
भोजन-	01:15-02:00
समापन सत्र	02:00-04:00

शोध सारांश भेजने की अन्तिम तिथि 30 अगस्त 2022 है। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि शोध सारांश कृतिदेव 010 फोंट या यूनिकोड में टाईप कराकर वर्ड एवं पी०डी०एफ० दोनों फाईल में ई-मेल hindiccsu@gmail.com एवं anjuhindi@gmail.com पर प्रेषित कीजिए। इस हेतु गूगल फार्म में समस्त सूचनाएं प्रेषित करने तथा विलंबत: दिनांक 30 अगस्त 2022 तक अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित कराने का कष्ट करें।

प्रतिभागिता शुल्क : शिक्षक ₹ 500/-, शोधार्थी एवं विद्यार्थी ₹ 250/-

आयोजन समिति :

शिक्षण सहायक :

डॉ० अंजू - 7618330081

डॉ० विद्यासागर सिंह-8171803589

डॉ० प्रवीन कटारिया-8077703608

डॉ० आरती राणा-8650832753

डॉ० यज्ञेश कुमार-7599231973

शोधार्थी :

मोहनी कुमार-9927715452

कु० पूजा-8859348851

विनय कुमार-7351263472

कु० पूजा यादव-8130881493

अरशदा रिज़वी-6395432859

अंकिता तिवारी-7237075463

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी विभाग

चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

एवं

उ0प्र0 भाषा संस्थान, लखनऊ

आजादी का अमृत महोत्सव दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विज्ञान, समाज विज्ञान और मीडिया में हिंदी

संरक्षक :

प्रो० संगीता शुक्ला, मा० कुलपति

हिंदी विभाग तथा उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ का आयोजन

01–02 सितम्बर, 2022

निवेदक :

प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी

संकायाध्यक्ष कला एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

फोन नं० 0121-2772455, मो०नं० 9412207200

संगोष्ठी पत्र व्यवहार हेतु ई-मेल

hindiccsu@gmail.com

nclohani@yahoo.co.in

anjuhindi@gmail.com

आयोजन सचिव :

डॉ० अंजू, शिक्षण सहायक

(हिंदी विभाग)

मो. : 7618330081

आयोजन सह सचिव :

डॉ० आरती राणा, शिक्षण सहायक

(हिंदी विभाग)

मो. : 8650832753

डॉ० यज्ञेश कुमार, शिक्षण सहायक

(हिंदी विभाग)

मो. : 7599231973

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ की स्थापना सन् 1965 में हुई। विश्वविद्यालय ने उत्तर प्रदेश ही नहीं अपितु संपूर्ण भारत में अपनी शैक्षणिक एवं शोध उपलब्धियों से विशेष स्थान प्राप्त किया है। वैश्विक स्तर पर पर भी विश्वविद्यालय के अनेक महत्वपूर्ण विभाग न केवल जाने जाते हैं अपितु उनके शोध, लेखन, शिक्षण का लाभ अनेक विश्वविद्यालयों और संस्थानों को प्राप्त हो रहा है। इस उपलब्धि का श्रेय विश्वविद्यालय के अकादमिक वातावरण और प्रशासनिक सक्षमता को जाता है।

प्रारंभ में विश्वविद्यालय में एम.फिल्. और पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारंभ हुए। पत्राचार पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी पाठ्यक्रम भी पढ़ाया जाता रहा है। विभाग के रूप में हिंदी विभाग की स्थापना मई 2002 में हुई। हिंदी विभाग की स्थापना के पश्चात् यहाँ एम०ए० हिंदी, एम०ए० व्यावसायिक हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, एम० फिल् तथा पीएच० डी० (हिंदी) के पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुए। वर्तमान में बी०ए० आनर्स हिंदी एवं नई शिक्षा नीति के अंतर्गत बी०ए० संस्थागत पाठ्यक्रम का भी प्रारम्भ हुआ है। विभाग की स्थापना से अब तक 'प्रवासी हिंदी साहित्य' तथा 'कौरवी लोक साहित्य' को स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना विभाग की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। देश में प्रवासी हिंदी साहित्य का पाठ्यक्रम सर्वप्रथम इस विभाग ने प्रारंभ किया जिसे आज देश के अन्य शिक्षण संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों ने अपनाया है। विभाग द्वारा केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के साथ एमओयू किया गया है जिससे राष्ट्रीय स्तर पर विभाग और संस्थान कार्य करेंगे।

हिंदी विभाग ने स्थापना वर्ष के साथ ही अकादमिक उपलब्धियाँ, शैक्षणिक गुणवत्ता एवं साहित्यिक वातावरण से विश्वविद्यालय में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर परचम लहराया है। इन बीस वर्षों में हिंदी विभाग ने शोध, प्रकाशन कार्य, प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया तथा विद्यार्थियों के विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार मिला। हिंदी विभाग को कम्प्यूटर लैब तथा तकनीकी उपकरणों के प्रयोग से देश के कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों की अग्रिम पंक्ति में स्थान पाता है। हिंदी विभाग प्रदेश सरकार द्वारा उत्कृष्ट अध्ययन केंद्र के रूप में मान्यता प्राप्त है। विभाग को भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के अंतर्गत पाण्डुलिपि स्रोत केन्द्र के रूप में चयनित किया गया। विभाग में हिंदी दिवस के अवसर पर विभागीय पत्रिका मंथन प्रकाशित होती है। यह विश्वविद्यालय का पहला विभाग है जिसने 2008 से अपना ऑनलाईन ब्लॉग प्रारम्भ किया है।

विभागाध्यक्ष सहित विभाग के शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों के साथ दूरदर्शन तथा रेडियो के कार्यक्रमों में प्रतिभागिता की जाती रही है। विभाग द्वारा राष्ट्रमण्डल खेलों में हिंदी प्रयोग को लेकर ऐतिहासिक जन अभियान छेड़ा गया परिणामस्वरूप हिंदी को आयोजन में वांछित प्रतिष्ठा मिली। विश्वविद्यालय में स्थित 'पं० मदन मोहन मालवीय हिंदी साहित्यकार कुटीर' अपने कलात्मक रूप में हिंदी प्रेमियों, शोधार्थियों, देश-विदेश के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। विभाग को अब तक विभिन्न सरकारी संस्थाओं द्वारा 05 शोध परियोजनाएं प्राप्त हुई हैं। विभाग को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली, भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, नई दिल्ली, उच्च शिक्षा विभाग, उ०प्र० शासन, लखनऊ द्वारा अनुदानित परियोजनाएँ प्राप्त हुई हैं जिसमें शोधपरक मूल्यांकन, चिंतन, विश्लेषण द्वारा नवीन स्थापनाओं को विभाग द्वारा प्रकाश में लाया गया है। विभाग की एक उपलब्धि यह भी है कि कोरोना काल की विपरीत परिस्थितियों में विभागाध्यक्ष प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी द्वारा अगस्त से अक्टूबर 2020 46 दिन निरंतर राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की स्थिति मूल्यांकन के लिए ऑन लाइन वेबगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें देश के प्रमुख राज्यों तथा विश्व के प्रमुख 38 देशों से विशेषज्ञों ने प्रतिभागिता की।

विभागाध्यक्ष प्रो0 नवीन चन्द्र लोहनी विभाग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिए प्रयासरत हैं। प्रो. लोहनी को स्विट्जरलैंड तथा चीन में आई.सी.सी.आर. चेयर के रूप में कार्य करने का अवसर विदेश मंत्रालय द्वारा दिया गया तथा उन्होंने इस अवसर का उपयोग हिंदी और भारतीय संस्कृति को व्यापक मंच पर ले जाने में किया।

इस आयोजन की स्वीकृति एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए विभाग माननीय कुलपति प्रो० संगीता शुक्ला जी तथा विश्वविद्यालय प्रशासन सहित उ०प्र० भाषा संस्थान लखनऊ का आभार व्यक्त करता है।

विभाग के इस आयोजन में सहभागिता हेतु विभाग आपका स्वागत करता है। आशा है आप अपने मूल्यवान विचारों से गोष्ठी को निष्कर्ष तक ले जाने में हमारी सहायता करेंगे।

विज्ञान, समाज विज्ञान और मीडिया में हिंदी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद भारत में यह चर्चा प्रारंभ हो गई है कि हिंदी भाषा के रूप में साहित्य और भाषा पाठ्यक्रमों के साथ-साथ विज्ञान, समाज विज्ञान और मीडिया ही नहीं ज्ञान-विज्ञान के तमाम क्षेत्रों में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सके। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर भाषा नीति लागू करने के साथ-साथ भारतीय भाषाओं से ताल-मेल बढ़ाकर हिंदी को समृद्ध करने और अंग्रेजी के स्थान पर उसे राष्ट्रीय स्तर पर संपर्क भाषा बनाने के लिए चर्चा चल रही है। जिसको अलग-अलग रूपों में समझा जा रहा है।

भारत के प्रधानमंत्री तथा गृह मंत्री सहित अनेक महत्त्वपूर्ण दायित्व पर कार्यरत विद्वान् जब भारत में एक संपर्क भाषा के संबंध में चर्चा करते हैं तो कुछ क्षेत्रों में विवाद भी आरंभ हो जाता है। कई बार हिंदी को थोपने की चर्चा होने लगती है तो कई बार हिंदी में विज्ञान, समाज विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा शिक्षा, विधि शिक्षा, कार्यालयी व्यवहार में शब्दावली की कमी तथा राष्ट्रीय स्तर पर उसके विस्तार की कमी पर चर्चा होने लगती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आने के बाद तकनीकी शिक्षा और चिकित्सा शिक्षा में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के पाठ्यक्रमों के निर्माण और उसको लागू करने की चर्चा भी रहती है। अभी तक इस क्षेत्र में कुछ संस्थानों की ओर से कार्य प्रारंभ करने की बात सामने आई है, परंतु व्यापक रूप में तकनीकी और चिकित्सा शिक्षा अभी हिंदी माध्यम या भारतीय भाषाओं के माध्यम में नहीं आ सकी है।

विज्ञान और समाज विज्ञान के क्षेत्रों में भारत के विश्वविद्यालयों में अध्ययन हो रहा है। हिंदी भाषी क्षेत्रों में अंग्रेजी तथा हिंदी मिश्रित शिक्षण प्रणाली विकसित हो रही है। अन्य राज्यों में भी अंग्रेजी क्षेत्रीय भाषाओं के साथ प्रयुक्त की जा रही है। किंतु पाठ्य-पुस्तकों और संदर्भ ग्रंथों में हिंदी भाषा अभी बहुत कम प्रयुक्त हो रही है। विश्व के तमाम देशों में अपनी भाषा में ज्ञान-विज्ञान लाने का कार्य तीव्रता से हुआ और ऐसे देशों ने तीव्र गति से प्रगति भी की है। इन सब सूचनाओं के रहते हुए भी भारत में अभी शिक्षण माध्यम में हिंदी का प्रयोग उस रूप में नहीं हुआ है जैसी अपेक्षा की गई थी।

मीडिया में हिंदी आवश्यकता तथा मजबूरी दोनों की वजह से बढ़ी है। भारत के संचार माध्यमों में उन संस्थानों को भी अपना भाषा माध्यम बदलना पड़ा जो अंग्रेजी से प्रारंभ हुए थे। आज ऐसे संस्थानों का एक बड़ा हिस्सा हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं के माध्यम में काम करने लगा है। सोशल मीडिया के आने के बाद यह गति तीव्र हुई है। जनसंचार माध्यमों के बड़े हिस्सों में सोशल मीडिया के हस्तक्षेप ने जन भाषा को बड़ा मंच उपलब्ध कराया है।

इस संगोष्ठी में समाज विज्ञान, विज्ञान और मीडिया में हिंदी के बढ़ते प्रयोग पर विद्वानों, शिक्षाविदों तथा पत्रकारों की राय मिलेगी जिससे इस क्षेत्र में नई संभावनाओं और बाधाओं के कारणों पर भी चर्चा होगी। चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय हिंदी भाषी क्षेत्र का विश्वविद्यालय है इसलिए हिंदी में तमाम पाठ्यक्रमों के विकास और उसकी प्रगति को निरंतर परखने का कार्य विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा किया जाता रहा है। यह संगोष्ठी उसी प्रयास की कड़ी के रूप में है।

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान भी भारतीय भाषाओं और हिंदी में साहित्य संस्कृति के विमर्शों को प्रोत्साहन दे रहा है। इस हेतु संस्थान की भूमिका बढ़ जाती है कि वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्थानीय भाषा, क्षेत्रीय भाषा, मातृभाषा में पाठ्यक्रम विकास की गति का निरंतर मूल्यांकन करता रहे। यह संगोष्ठी उनके इस प्रयास को समर्थन देने से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगी। हिंदी विभाग चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ उनके इस सहयोग के लिए आभारी है।